SELFSTUDYHISTORY.COM- HISTORY OPTIONAL TEST SERIES-2025

SNEHA	[redacted]	[redacted]
NAME	**Mobile No.**	**Email ID**

Start Time: 5.00pm End Time: 8.10pm

ANSWER SHEET

(FULL TEST III- MODERN INDIA)

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Time Allowed: 180 Minutes **Maximum Marks: 250**

==

There are EIGHT questions in this paper.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question No. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

इस पेपर में आठ प्रश्न हैं।

अभ्यर्थी को कुल मिलाकर पांच प्रश्न हल करने होंगे। प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं और शेष में से तीन का उत्तर देना होगा।

किसी प्रश्न/भाग के अंकों की संख्या उसके सामने अंकित होती है। प्रश्नों में शब्द सीमा, जहां भी निर्दिष्ट हो, का पालन किया जाना चाहिए।

प्रश्नों के प्रयासों को क्रमिक क्रम में गिना जाएगा। जब तक काट न दिया जाए, किसी प्रश्न का प्रयास गिना जाएगा, भले ही आंशिक रूप से प्रयास किया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी भी पृष्ठ या पृष्ठ के भाग को स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

==

SECTION A

Candidates must not write on this margin

Q.1 Answer the following in about 150 words each: 10x5=50

Q.1(a) Do you agree that the Deccan ulcer ruined Aurangzeb? [10 Marks]

क्या आप सहमत हैं कि दक्कन अल्सर ने औरंगजेब को बर्बाद कर दिया? [10 अंक]

दक्कन के संदर्भ में औरंगजेब (1658-1707ई.) की साम्राज्यवादी नीति की तुलना ऐसा अजगर साँप से की जाती है जिसने इतना खाँ लिया कि जिसको वह पचा न सका।

दक्कन नीति के अपने तीसरे चरण में औरंगजेब आक्रमक नीति अपनाते हुए 1685 में बीजापुर पर कब्जा कर लिया और 1687 में गोलकुंडा को अपने अधिकार में ले लिया।

मराठों के प्रति भी हिंसात्मक आक्रमक नीति अपनाते हुए मराठा छत्रपति शम्भाजी को गिरफ्तार करके घोर यातना देकर मार डाला और और कृष्णा नदि के दक्षिण में चंडगिरि (आंध्रप्रदेश) तक मुगल साम्राज्य का विस्तार किया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidate must not write on this margin Q.1 (b)

औरंगज़ेब की दक्कन नीति का साम्राज्य पर प्रभाव

⊙ जनता के अभाव में मराठो ने औरंगजेब के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया और फिर मुगल-मराठा संघर्ष में ~~और~~ औरंगजेब 25 वर्षों तक उलझा रहा।

⊙ परिणामस्वरूप उत्तर में राजनीतिक व प्रशासनिक व्यवस्था कमजोर होने कारण राजपूत अफगानो, जाटो ने विद्रोह कर दिया।

⊙ ~~आ~~ दक्षिण में जागीरदारी व्यवस्था के प्रसार से हासिलदामी और जमादामी में अंतर से जागीरदारी संकट, कृषि संकट और इनसे प्रेरित दरबारी षड्यंत्र को प्रोत्साहन मिला।

⊙ इन सभी से साम्राज्य के आर्थिक, राजनीतिक ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा।

अतः जिस प्रकार नेपोलियन को स्पेन के नासूर ने खत्म कर दिया उसी प्रकार औरंगजेब को दक्कन के ~~नासि~~ नासूर ने खत्म कर दिया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.1 (b) Discuss the role of guilds in the economic life of early medieval India. [10 Marks]

प्रारंभिक मध्ययुगीन भारत के आर्थिक जीवन में गिल्ड श्रेणियों की भूमिका पर चर्चा करें। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

प्रारंभिक मध्ययुगीन भारत (6th A.D - 12th A.D) में व्यापार, उत्पादन, शिल्प गतिविधियो के रूप मे संगठित गिल्ड श्रेणियो की आर्थिक भूमिका महत्वपूर्ण रही हालांकि समकालीन सामंती अवस्था ने उनकी भूमिका में गिरावट लाया।

गिल्ड श्रेणियों की भूमिका।

⊙ उत्पादन गतिविधियो में जैसे शिल्प उत्पादन, ~~धातु~~ ~~एवं~~ वस्त्र निर्माण मे भूमिका रही

(उदा०) राष्ट्रकूट के ताम्रपत्रो से श्रेणियो के शिल्प गतिविधियो की जानकारी प्राप्त होती है।

⊙ निर्माण → स्थापत्य निर्माण मे गिल्डो की भूमिका की जानकारी भी हमें विभिन्न अभिलेखो से प्राप्त होती है।

(उदा०) मंदसौर के बुनकरो ने एक सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया था।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

⊙ क्षेत्रीय व्यापार के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बुनकर, बढ़ई, जैसी श्रेणियो की भूमिका रही थी (उदा०) दक्षिण भारत मे नानादेशी मणिग्रामम् जैसी श्रेणियाँ व्यापार मे एकाधिकार रखती थी जो सत्ता परिवर्तन मे भी अप्रभावित रहती थी।

⊙ भूमिदान → भू-ताम्रपत्रो से हमे श्रेणियो के के प्रमुख ज्येष्ठी के द्वारा मंदिरो को भूदान की जानकारी प्राप्त होती है।

हालांकि 9वी सदी से 11वी सदी तक अंतर्द्वीप व्यापार, नगरीकरण और मुद्रा-अर्थव्यवस्था के ह्रास के कारण श्रेणियो की व्यापारिक भूमिका मे गिरावट देखी गई

फिर भी तृतीय नगरीकरण के साथ उनकी भूमिका पुन: महत्वपूर्ण हो गई जिनमें जिन्होंने दक्षिण मे नगरम् के माध्यम से व्यापार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.1 (c) The motive of Alauddin Khalji's agrarian policy was to curb the powers of the intermediaries. Examine the measures which he adopted to achieve his objective. [10 Marks]

अलाउद्दीन खिलजी की कृषि नीति का उद्देश्य बिचौलियों की शक्तियों पर अंकुश लगाना था। अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उसने जो उपाय अपनाए, उनका परीक्षण कीजिए। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

अलाउद्दीन खिलजी की कृषि नीति के उद्देश्य के संदर्भ मे बरनी कहता है कि शासक का उद्देश्य है कि "अकाबिया (शक्तिशाली) का बोझ जुआफा (कमज़ोर) पर न पड़े।

हालांकि फिर भी अलाउद्दीन (1296-1316) की कृषि नीति के राजनीतिक व प्रशासनिक उद्देश्य के संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए

उद्देश्य को प्राप्त करने के उपाय

1. बिचौलियो के विशेषाधिकारो को समाप्त करते हुए हकुक-ए-खोती, किस्मत के खोती जैसी कर मुक्त भूमि को राजकीय नियंत्रण में लाना।

2. बिचौलियो की भूमिका को दबाकर अधिकारियो के माध्यम से प्रत्यक्ष राजस्व वसूली

Candidate must not write on this margin Q.1 (d)

3. उत्पादकता के आधार पर भूमि का वर्गीकरण करते हुए 50% भूराजस्व दर लागू

परीक्षण

- बिचौलियो की शक्ति पर अंकुश लगाकर ग्रामीण संसाधनों का दोहन से भूराजस्व वृद्धि और शक्तिशाली स्थायी सेना के निर्माण मंगोल आक्रमण का सामना करना
- ग्रामीण प्रशासन पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित।
- किसानो की सुरक्षा (मध्यस्थो से)

हाँलाकि वह पूरी तरह बिचौलियो का समाप्त नही कर सका, उनका प्रभाव रहा और 50% भूराजस्व दर और इसकी प्रतिगामी प्रकृति से किसानो (निर्धन) को नुकसान हुआ।

इस प्रकार भले ही राजनीतिक दृढ़ता और भूराजस्व वृद्धि का उद्देश्य पुरा हुआ परन्तु किसानो को लाभ नही मिला।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.1 (d) "Humayun's Tomb is characterised by the best features of the Mughal architecture. Comment. [10 Marks]

"हुमायूँ का मकबरा मुगल वास्तुकला की सर्वोत्तम विशेषताओं से युक्त है। टिप्पणी करें। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

सल्तनतकाल की निरंतरता मे मुगल काल में भी मकबरा निर्माण की परंपरा अपने उत्तरोत्तर विकसित रूप मे जारी रही थी

मुगल शासको की स्थापत्य निर्माण मे पहला उदाहरण "हुमायूँ के मकबरे का ही मिलता है जिसका निर्माण अकबर के समय हुआ हालांकि इसकी योजना हुमायूँ द्वारा ही निर्मित की जा चुकी थी,

"हुमायुँ का मकबरा" वैज्ञानिक प्रकार का स्थापत्य है जिसमें दोहरे गुबंद का प्रयोग हुआ है। जो ईरानी शैली का प्रभाव है और भारतीय स्थापत्य शैली के प्रभाव मे इसमे सजावट के लिए छतरियो का प्रयोग हुआ है।

Candidates must not write on this margin

Q.1 (e)

लोदी मकबरे की परम्परा के साथ यह भी चार बाग शैली मे निर्मित है अर्थात बाग के बीच मै मकबरा जिसके चारो तरफ से रास्ता निकलता है।

इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला की विशेषता के साथ-साथ ही सफेद संगमरमर से निर्मित यह मकबरा इसलिए विशेष महत्व रखता है कि इसमें बादशाह को ~~देवत्व~~ देवत्व का दर्जा देते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि बीच मे एक पवित्र आत्मा निवास करती है जिसके चारो तरफ शांति रहनी चाहिए

वर्तमान मे यूनेस्को की विश्व विरासत धरोहर में शामिल हुमायुँ का मकबरा मुगल वास्तुकला की सर्वोत्तम विशेषताओं व अपने आकर्षक स्वरूप के कारण देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.1 (e) Discuss the growth of the Nirguna School of Bhakti Movement emphasising the contribution of Kabir and Nanak to it. [10 Marks]

भक्ति आंदोलन के निर्गुण स्कूल के विकास पर चर्चा करें और इसमें कबीर और नानक के योगदान पर जोर दें। [10 अंक]

पूर्वमध्यकाल में दक्षिण में भक्ति आंदोलन का उद्भव देखा गया जिसको रामानंद द्वारा उत्तर भारत में लाकर भक्ति आंदोलन के स्वरूप में परिवर्तन किया।

भक्ति आंदोलन के निर्गुण स्कूल का विकास

- दक्षिण भारत से आयी भक्ति से समर्पण का भाव ग्रहण किया।
- उत्तर भारत मे प्रचलित नाथपंथ से निराकर ईश्वर की अवधारणा का प्रभाव।
- उत्तर भारत मे प्रचलित इस्लाम धर्म से एकेश्वरवाद के तत्व और सूफीवाद से प्रेम के तत्व ग्रहण किया

इस प्रकार सभी विशेषताओ के साथ निर्गुण स्कूल का विकास हुआ।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin Q.2

निर्गुण भक्ति आंदोलन में कबीर व नानक का योगदान

1. धार्मिक सुधार :- कबीर व नानक ने अपने तर्कों से हिंदू व इस्लाम धर्म के कर्मकाण्डी स्वरूप की आलोचना कर मूर्तिपूजा, मंदिर, मस्जिद को अस्वीकार कर दिया

2 समाज सुधार — कबीर व नानक ने जाति-व्यवस्था के कठोर स्वरूप को अस्वीकार कर दिया और कहा कि जब सभी ~~ईश्वर~~ मनुष्य ईश्वर की संतान हैं।

3. धर्म की एकता के माध्यम से मानव की एकता की बात की जैसे ईश्वर-अल्लाह एक है तो उनके अनुयायी अलग नहीं हो सकते हैं।

इस प्रकार मध्ययुगीन सीमा से ऊपर उठकर कबीर व नानक ने अपने धार्मिक, सामाजिक विचार रखे और सामंती समाज को चुनौती दी।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.2 (a) Trace the evolution of the religious views of Akbar. What was the implications of his policy of Sulh-I kul? [20 Marks]

अकबर के धार्मिक विचारों के विकास का पता लगाएँ। उनकी सुलह-ए-कुल की नीति के क्या निहितार्थ थे? [20 अंक]

Candidates must not write on this margin

मुगल सम्राट अकबर (1556–1605 ई.) के अपने धार्मिक विचारों की विलक्षणता (मध्यकाल में) के कारण समकालीन शासकों की तुलना में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

अकबर के धार्मिक विचारों का विकास क्रमिक रूप से हुआ तथा इसके आधार (पृष्ठभूमि) में मंगोल-मुगल परम्परा के साथ-साथ उनकी माता हमीदा बानो और गुरु अब्दुल रतीफ़ की भूमिका रही थी और वह सूफी संत इब्न-उल-अरबी की वहदत-उल-वजूद की अवधारणा से प्रभावित था।

1556–1573 के बीच अकबर भी रूढ़ीवादी मुस्लिम विचारो से प्रभावित

था वह उलेमाओं के प्रभाव में था हालांकि उदार नीति अपनाते हुए उसने 1563 में तीर्थयात्रा कर व 1564 में जजिया कर को समाप्त करता है।

1573 - 1579 के बीच वह धार्मिक रहस्यवाद की ओर बढ़ता है उसने 1575 मे इबादतखाना की स्थापना की और सभी धर्म विद्वानों को आमंत्रित किया और सभी धर्मों के मर्म के समझने का प्रयास किया।

1579 मे अकबर ने महजरनामा की घोषणा कि और खुद के नाम का खुतबा पढ़ने की घोषणा कि और राजत्व को प्रत्यक्ष रूप से देवत्व से जोड़ते हुए खुद को अल्लाह का प्रतिनिधि घोषित किया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

1579 ई. के बाद अकबर इस्लाम धर्म की सीमाओ को खुद को धार्मिक विचारो को आगे बढ़ाता है और 1582 में वह दीन-ए-इलाही की घोषणा करता है यह कोई धर्म नही बल्कि उच्च नैतिक विचारो का संग्रह था जिसके माध्यम से अपने सार्वजनिक व प्रशासन जीवन धर्म के (उलेमा) प्रभाव को कम करने का प्रयास किया।

आगे अकबर हिन्दुस्तान के धार्मिक विविध स्वरूप को समझते हुए सुलह-ए कुल नीति को सामाजिक व राजनीतिक अवस्था मे अपनाने का प्रयास करता है।

सुलह-ए-कुल का अर्थ है शाँति (सभी की भलाई)। अकबर की

Q.2 (b)

यह नीति ~~क~~ सूफी संत इब्न-उल-अरबी की वहदत-उल-वजूद की अवधारणा से प्रेरित थी।

अमीर खुसरो सुलह-ए-कुल की व्याख्या करते हुए ~~ब्राह्मण~~ पृथ्वी के चार तत्वों की तुलना समाज के चार अंगों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) से करता है और कहता है कि राज्य संचालन हेतु चारों का सहयोग आवश्यक है।

अकबर हिंदू-मुस्लिम संबंधों में सुलह ~~का~~ कुल नीति अपनाता है और साम्राज्य में सभी धर्म के लोगों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखता है।

अतः आगे धार्मिक विचारों में सुलह-ए-कुल नीति दूरगामी सिद्ध होती है जिसने न केवल मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ किया बल्कि समन्वित संस्कृति को भी प्रोत्साहन दिया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.2 (b) Describe village polity and economy of medieval Deccan. [15 Marks]

मध्यकालीन दक्कन की ग्रामीण राजनीति और अर्थव्यवस्था का वर्णन करें। [15 अंक]

मध्यकाल में दक्कन क्षेत्र राजनीतिक, सामाजिक प्रशासनिक, व आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। मध्यकाल मे राष्ट्रकूट काकतीय, बहमनी, विजयनगर और मराठो के अंतर्गत दक्कन की ग्रामीण राजनीति व अर्थव्यवस्था ने स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता प्राप्त की।

मध्यकालीन दक्कन की ग्रामीण राजनीति

1. ग्राम सभा → चालुक्य कालीन स्रोतो के अनुसार ग्राम सभाए अधिक स्वायत्ता रखती थी उनको अपने मामलो का प्रबंधन करने और भूराजस्व एकत्रित करने कर लगाने जैसे अधिकार प्राप्त थे

◉ विजयनगर शासक काल में ग्राम सभाएं स्थानीय स्तर पर सिंचाई अवस्था का प्रबंधन करती थी।

• ग्रामीण स्तर पर मुकद्दम, ग्रामीणी जैसे मुखिया होते थे तथा मराठों के समय देशमुख व देशपाण्डे ग्रामीण राजनीति में वंशानुगत प्रभाव रखते थे।

◉ ग्रामीण राजनीति में केंद्रीय शासन की भूमिका परामर्शदाता के साथ-साथ पर्यवेक्षण कर्ता की भी होती थी तथा ग्राम सभाएं भूराजस्व एकत्रित करके केंद्रीय खज़ाने में जमा करवाती थी।

दक्कन अर्थव्यवस्था

◉ अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण तथा उपजाऊ मृदा के कारण

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

दक्कन मे कपास, गन्ना चावल जैसी फसले होती थी

- कढ़ाई, बुनाई, स्थापत्य निर्माण तथा सूती वस्त्र उत्पादन जैसी व्यापारिक गतिविधियाँ भी प्रचलित थी।
- अमुक्त माल्यद के अनुसार तथा विदेशी यात्रियो के विवरण के अनुसार दक्कन मे उत्पादित फसलो का अंतरद्वीप व्यापार भी होता था। तथा उत्तर भारत मे शहरो को कच्चे माल की आपूर्ति होती थी जिसने तृतीय नगरीकरण मे भूमिका निभायी।

इस प्रकार मध्यकाल में दक्कन की क्षेत्रीय राजनीति ने विकेंद्रीकृत अवस्था के साथ स्वायत्ता तथा आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त कि।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.2 (c) Analyse the social composition and the role of nobility under the successors of Iltutmish. How did it affect the contemporary politics? [15 Marks]

इल्तुतमिश के उत्तराधिकारियों के अधीन कुलीन वर्ग की सामाजिक संरचना और भूमिका का विश्लेषण करें। इसका समकालीन राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा? [15 अंक]

इल्तुतमिश (1211-1236) ने अपने वफादार तुर्कि दासो से (40 दास) तुर्के-ए-चहलगानी का गठन किया जो सल्तनत मे कुलिन वर्ग का प्रतिनिधित्व (उलेमाओ के साथ) करती थी

इल्तुतमिश के पश्चात कुलिन वर्ग ने राज्य के संगठन आधार में अपनी हस्तक्षेप नीतियो से नकारात्मक भूमिका निभायी थी।

कुलिन वर्ग की संरचना।

(a) तुर्की दास → ये प्रशासनिक अधिकारी होते थे तथा शासको द्वारा इन्हे इस्लाम मे मुक्ति पद से पर नियुक्त किया जाता तथा ये दरबार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

• उलेमा वर्ग → ये धार्मिक नेता होते थे जो धर्म के संदर्भ ही दरबार में अपना प्रभाव रखते थे।

• अन्य हिंदू या अफगान, ईरानी सरदार → इस समय इनका प्रतिनिधित्व अत्यंत सीमित था।

(कुलीन वर्ग की भूमिका)

• प्रशासनिक भूमिका → इक्ता व्यवस्था का संचालन तथा क्षेत्रीय स्तर पर कानून व व्यापारिक गतिविधियों का संचालन।

• हस्तक्षेप → कुलीन वर्ग ने सुल्तानों के चुनाव में हस्तक्षेप किया जैसे रजिया सुल्तान (1236-40) के समय उन्होंने

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

रज़िया की नीतियों का विरोध किया, अंततः कुलीन वर्ग के षड़यंत्र से 1240 ई. में रज़िया को गद्दी से हटना पड़ा

• रज़िया के बाद बहरामशाह, महमूद जैसे उत्तराधिकारी तुर्क-ए-चहलगानी के कठपुतली बने रहे थे

• गियासुद्दीन तुगलक (1246-66) के समय में भी अमीर बलबन के हाथों में वास्तविक सत्ता रही।

समकालीन राजनीति पर प्रभाव

⊙ हस्तक्षेप से राजनीतिक अखण्डता तथा विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहन, तथा केन्द्रीय सत्ता कमज़ोर हुई।

⊙ तुर्कीकरण की नीति से बहरामशाह के समय मंगोल आक्रमण का सामना हुआ।

⊙ निरंकुश अमीर वर्ग से केन्द्रीय स्तर पर अव्यवस्था

आगे फिर कुलीन वर्ग के प्रति बलबन ने लौह व रक्त की नीति अपनायी और अलाउद्दीन व मुहम्मद ने मिश्रित अमीर वर्ग की नीति से उनका प्रभाव कम करने का प्रयास किया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.3 (a) What measures were initiated by the Sultans for the consolidation of the Delhi Sultanate? Discuss. [20 Marks]

दिल्ली सल्तनत को सुदृढ़ करने के लिए सुल्तानों ने क्या उपाय किये? चर्चा करें। [20 अंक]

Candidates must not write on this margin

1206ई. में मुहम्मद ~~खोरी~~ गोरी द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही सुल्तानों ने लगभग 300 वर्षों (1526ई तक) तक शासन किया और सल्तनत को सुदृढ़ करने में अलग-2 सुल्तानों की अलग-2 नीति रही।

- सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने तुर्क-ए-चहलगानी (रोक व संतुलन की नीति पर आधारित) की स्थापना की और लाहौर से लखनौती तक इक्ता प्रणाली को लागू किया

- बलबन ने (1266-88) ने अपनी लौह व रक्त नीति से आंतरिक रूप से राज्य का पुनर्गठन करके मंगोलो का सामना करने हेतु उ० पश्चिम में सुनाम - समाना - भटिंडा और लाहौर-काबुल दीपालपुर की सुरक्षा पंक्ति का निर्माण किया

⊙ इल्बरी वंश (1206-1290) के बाद खिलजी वंश (1290-1320) के शासकों में अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) ने साम्राज्य में सुदृढ़ करने के लिए अपनी कृषि नीति से ग्रामीण स्तर पर बिचौलियों पर अंकुश लगाकर ग्रामीण संसाधनों का दोहन किया

अलाउद्दीन ने स्थायी सेना का निर्माण किया और हुलिया व दाग की पद्धति लागू कि। मूल्य नियंत्रण व सैनिकों कि आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बाजार नियंत्रण व्यवस्था लागू किया और बलबन की सुरक्षा पंक्ति को मजबूत करते हुए मंगोल आक्रमण का सामना किया।

तुगलक वंश (1320-1414) के शासक मुहम्मद बिन तुगलक (1324-1351) द्वारा सल्तनत के सुदृढ़ीकरण हेतु उसकी पाँच

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

योजनाओं को बरनी द्वारा जिक्र किया गया जैसे राजधानी परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा चलन कराचिल अभियान, खुरासान अभियान और दोआब मे वेबाजिक कृषि।

मुहम्मद बिन तुगलक ने मिश्रित अमीर वर्ग का निर्माण किया और दरबार में उलेमाओं के प्रभाव को सीमित कर दिया।

इस्ता व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु मुहम्मद ने एक पद पर दो अधिकारियो की नियुक्त किया तथा उनकी आय-व्यय की जाँच हेतु मामिल नामक अधिकारी को नियुक्त किया।

तुगलक वंश के अगले शासक फिरोजशाह तुगलक (1353-1388) द्वारा मुहम्मद बिन तुगलक की नीतियो से हुए

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

.3 (b)

विद्रोह और राजनीतिक अस्थिरता को खत्म करने हेतु पृथक नीति अपनायी।

फिरोजशाह द्वारा साम्राज्य विस्तार के बजाय मौजूदा साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण का प्रयास किया उसने अतिरिक्त करो को समाप्त कर चार कर लगाए और कुराजाम्न आपका आकलन करवाए।

फिर तुगलक वंश के बाद अफगान साम्राज्य (लोदी वंश) की स्थापना हुई जो अपनी विकेंद्रीकृत प्रवृत्ति के लिए जाना जाता है।

इस प्रकार दिल्ली सल्तनत विभिन्न शक्तिशाली सुल्तानो के शासन काल को प्रतिबिंबित करती है जिसका समकालीन राजनीति, प्रशासनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र मे केंद्रीय भूमिका रही थी।

Copyright © by SELFSTUDY...

Q.3 (b) "The saints of Maharashtra produced a revolution without the uproar of a rebellion.' Comment. [15 Marks]

'महाराष्ट्र के संतों ने विद्रोह के शोर के बिना ही क्रांति ला दी।' टिप्पणी करें। [15 अंक]

Candidates must not write on this margin

दक्षिण की भक्ति आंदोलन के प्रभाव व नाथपंथ के प्रभाव के साथ विट्ठल भगवान की आराधना के साथ ~~महाराष्ट्र~~ मे महाराष्ट्र धर्म आंदोलन का उद्भव हुआ जिसका नेतृत्व ज्ञानदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास जैसे नेताओ ने किया।

महाराष्ट्र के संत - विद्रोह के शोर के बिना ही क्रांति ला दी

- मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का स्वरूप प्रकृति व उद्देश्य तथा नेतृत्व ~~मराष्ट्र~~ महाराष्ट्र मे विशिष्ट रहा था।
- संतो के नेतृत्व में महाराष्ट्र धर्म एक सामाजिक - राजनीतिक आंदोलन भी था जिसने समाज सुधार के साथ - साथ

Copyright ©

मराठा राज्य की स्थापना हेतु सामाजिक आधार निर्मित किया।

- महाराष्ट्र के संतो ने जाति व्यवस्था को पूर्ण रूप से अस्वीकार करते हुए समान मराठी पहचान की नींव रखी जिससे सामाजिक गतिशीलता बढ़ी और आगे शिवाजी ने निम्न जातियों को भी सेना मे शामिल किया।

- तुकाराम ने सन्यासी जीवन को अस्वीकार करते हुए आध्यात्मिक जीवन को सांसारिक जीवन मे जोड़ दिया।

- संतो ने मानवता की एकता व मानवता की सेवा का संदेश प्रचारित किया जैसे उन्होंने घोषित किया —

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

" मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा है "

- एकनाथ, ज्ञानदेव जैसे संतो ने ~~महाराष्ट्र~~ महाराष्ट्र धर्म को सहिष्णु की जगह जयिष्णु बनाया जो सामाजिक अन्याय का प्रतिकार लेता था।

- संतो का मराठी भाषा व साहित्य के विकास मे भी एक क्रांति ही ला दी जैसे ज्ञानदेव ने ज्ञानेश्वरी टीका लिखी तथा तुकाराम, रामदास ने मराठी मे अंभगो गीतो की रचना की।

हालांकि संतो का प्रभाव तत्कालिक रूप मे क्रांतिकारी नही रहा था अपितु परिवर्तनकारी रूप ही रहा था जैसे सामाजिक सुधार भी धीरे-धीरे हुए और राजनीतिक रूप से मराठा राज्य की स्थापना भी 1674 मे शिवाजी द्वारा की गई।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.3 (c) 'Babur was a great conqueror, but not an empire builder.' Discuss. [15 Marks]

'बाबर एक महान विजेता था, लेकिन साम्राज्य निर्माता नहीं।' चर्चा करें। [15 अंक]

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में बाबर की गणना ऐसे सेना नायकों में कि जाती है जो अपने जीवन में अनेक असफलताओं को अस्वीकार करते हुए समरकंद के छोटे फरगना के शासक से हिंदुस्तान जैसे साम्राज्य का बादशाह बना था।

मध्य एशिया में समरकंद पर कब्जा पाने की बाबर की महत्वाकांक्षा सफल नही हो सकी थी वह दो बार समरकंद पर नियंत्रण पाने की कोशिश में असफल रहा था बाद में उसने काबुल पर नियंत्रण किया और भारत की तरफ अपनी दृष्टि डाली।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

उ० पश्चिम मे बाबर अफगान सेनापति को पंजाब मे पराजित करने मे सफल रहा था तथा फिर उसका हिंदुस्तान मे इब्राहिम लोदी से प्रत्यक्ष टकराव हुआ।

1526 में पानीपत के मैदान मे बाबर ने अपनी घोरी की सेना के साथ अपनी सैन्य कूटनीति के बल पर इब्राहिम लोदी की विशाल अफगान सेना को पराजित किया।

1527 मे बाबर ने खान्वा के युद्ध में राणा सांगा जैसी राजपुत शक्ति को पराजित करने के बाद 1528 मे चन्देरी के युद्ध में मेदिनीराय व घाघरा के युद्ध मे (1529) में अफगानो को पराजित ~~कर~~ किया।

1530 मे बाबर की मृत्यु हो गई और उसे अपने साम्राज्य निर्माण और सेगठित

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

करने के का समय ही नहीं मिला परन्तु उसने वह संभावित आधार का निर्माण किया जिससे भविष्य में विशाल मुगल साम्राज्य का निर्माण हो सका जैसे

— बाबर ने गंगा-यमुना दोआब जैसे उपजाऊ क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया तथा जिससे संसाधनों का दोहन आसान हो सके।

— बाबर ने हुमायूं को सलाह दी कि उसे एशियाई की साम्राज्य विभाजन की नीति को नहीं अपनाना है और हिंदुस्तान में उदार धार्मिक नीति का पालन करना है।

इस प्रकार बाबर एक निर्विवाद रूप से एक सफल सेनानायक था और उसने विशाल मुगल साम्राज्य के निर्माण का आधार उद्घाटित किया था।

Q.4 (a) Analy aspect

मुगल

कृषि

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

SECTION B

Answer the following in about 150 words each: 10x5=50

Q.5
5 (a) Critically examine Ibn Batutah's Rehla as an important source of Indian history. [10 Marks]

भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में इब्न बतूता की रेहला का आलोचनात्मक परीक्षण करें। [10 अंक]

इब्न बतुता मोरक्को यात्री था। जो 1333 में भारत मे आता है और मुहम्मद बिन तुगलक (1326-1351 ई.) द्वारा काज़ी पद पर नियुक्त होता है।

भारत मे 8 साल रहने पर इब्नबतूता ने समकालिन राजनीतिक, सामाजिक प्रशासनिक अवस्था के बारे मे अपने यात्रा वृतांत रेहला (अरबी भाषा) मे लिखा

⊙ इब्नबतूता रेहला मे मुहम्मद बिन तुगलक की राजनीतिक, प्रशासनिक नीतियो जैसे दौलताबाद मे राजधानी स्थानांतरण (के साथ साथ उसके अस्तित्व के बारे मे भी लिखता है।

Q.5 (b)

• वह समकालीन डाक व संचार अवस्था की कुशलता का आश्चर्यजनक रूप से वर्णन करता है।

• मुहम्मद के समय जाति व्यवस्था, दास प्रथा, भूमि उत्पादकता, महिलाओ की स्थिती, विभिन्न नगरो का स्थिति का भी वर्णन रेहला में मिलता।

हालांकि इतिहासलेखन के रूप मे इब्नबतूता कि कुछ सीमाए रही जैसे वह व्यक्तिगत अनुभव की बजाए सुनी-सुनाई बातो के आधार पर लिखता है और मुहम्मद के प्रति द्वेष भावना रखता है।

कुछ ~~इतिह~~ विद्वानो का मानना है कि उसने अपना यात्रा वृतांत भारत से जाने के बाद लिखा और अन्य स्रोतो से भी आधार बनाया था।

कुछ सीमाओ के बावजुद भी मुहम्मद बिन तुगलक के काल की सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक जानकारी प्राप्त करने मे रेहला की भूमिका महत्वपूर्ण है।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

Q.5 (b) Assess the role of cities in the economy of the Mughal India. [10 Marks]

मुगलकालीन भारत की अर्थव्यवस्था में शहरों की भूमिका का आकलन करें। [10 अंक]

मुगलकाल (1526 – 1858ई) में तृतीय नगरीकरण अपनी परिपक्व अवस्था में पहुंच चुका था तथा विकसित शहरों ने सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक व राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अर्थव्यवस्था में शहरों की भूमिका – मध्यकाल

① अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भूमिका — गोवा मुगलकाल में महत्वपूर्ण बंदरगाह रहा था जिससे पश्चिम व मध्य एशिया और पूर्वी अफ्रीका के साथ व्यापार होता था।

② ~~अंतर्~~ अंतर-क्षेत्रीय व्यापार → मथुरा तथा बंगाल से सूति वस्त्रो का व्यापार अन्य भारतीय शहरो से होता था।

③ शिल्प गतिविधियो में भी शहरो की भूमिका

Q.5 (c)

महत्वपूर्ण बड़ी जैसे लाहौर, कश्मीर मुगलकाल मे मलीन बुनाई और सोने की कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध थे।

(4) दक्षिण में कालीकट एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के साथ-साथ ~~जहाज न~~ जहाज निर्माण उद्योग का केंद्र था।

(5) शहर में ~~स्थिति~~ स्थित मंदिरो की धर्म-निरपेक्ष गतिविधियो मे महत्वपूर्ण भूमिका थी जैसे मंदिर परिसर में शिल्पियो को बसाकर व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा।

(6) मुगलकाल में विजयनगर, तंजौर, मुर्शिदाबाद सूरत जैसे शहर आर्थिक गतिविधियो मे विश्व प्रसिद्ध थे जिनकी चर्चा विदेशी स्रोतो से प्राप्त होती है।

शहरो की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही मुगलकाल आर्थिक समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता था। शहरी समृद्धि ने ग्रामीण समृद्धि को भी बढ़ावा दिया

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.5 (c) Critically examine the Deccan policy of Delhi Sultans. [10 Marks]

दिल्ली के सुल्तानों की दक्कन नीति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

दिल्ली सुल्तानो की दक्कन नीति को केवल साम्राज्य विस्तार के साथ साथ व्यापारिक कूटनीतिक, सैनिक रणनीतिक दृष्टिकोण के संदर्भ मे देखा जाना चाहिए

सर्वप्रथम अलाउद्दीन खिलजी (1291-1316) ने विन्ध्य पर्वत के दक्षिण मे विस्तार की नीति अपनायी और मलिक काफूर के नेतृत्व में देवगिरि (1305) अभियान और द्वारसमुद्र अभियान (1306) हुआ और फिर माबार पर भी आक्रमण किया।

हाँलाकि अलाउद्दीन ने प्रत्यक्ष नियंत्रण न रखते हुए अधिराजत्व की नीति अपनायी और निरंतर अनुदान प्राप्त किया और अपने साम्राज्य को अखिल भारतीय स्वरूप देकर दक्षिण के संसाधनो के दोहन कर

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.5 (e) How did arrival of Portuguese affect existing trade system of Indian ruler and merchants? [10 Marks]

पुर्तगालियों के आगमन ने भारतीय शासकों और व्यापारियों की मौजूदा व्यापार प्रणाली को किस प्रकार प्रभावित किया? [10 अंक]

Candidates must not write on this margin

1498 में पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा के भारत के कालीकट पहुंचने के साथ ही पुर्तगालियों की गिद्ध दृष्टि भारतीय व्यापार पर पड़ती है जिन्होंने अपनी एकाधिकारवादी प्रवृत्ति से भारतीय व्यापार को प्रभावित किया।

पुर्तगालियों ने निम्न तरीको से भारतीय शासको और व्यापारियों की मौजूदा व्यापार प्रणाली को प्रभावित किया

जैसे

1 हिंदमहासागर से मध्य एशिया व पश्चिम एशिया के साथ व्यापार में अरबों की भूमिका अत्यंत सीमित कर दिया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

2. एकाधिकार → उन्होंने घोड़े के व्यापार, हथियार और मसालों के व्यापार में खुद का एकाधिकार घोषित किया और भारतीय व्यापारियों, शासकों, जिनि पुर्तगालियों (व्यापारी) को भी इन वस्तुओं के व्यापार से बाहर कर दिया।

3 कर्टाज प्रणाली को लागू करते हुए हिंद महासागर की स्वतंत्र व्यापार नीति को बाधित किया। इसके तहत भारतीय व्यापारियों, शासकों सभी को व्यापार करने के लिए पुर्तगाली अधिकारियों से परमिट लेना पड़ता था।

4. सीमा शुल्क व्यवस्था — सभी जहाजों को गोवा बंदरगाह से जाने को बाध्य किया और सीमा शुल्क वसूला।

यद्यपि फिर भी पुर्तगाली भारतीय व्यापारियों व शासकों की भूमिका को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाए और आगे डच, अंग्रेजों के समय उनकी भूमिका फिर बढ़ने लगी।

Q.6 (

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.7 (a) Were the economic measures introduced by the Sultanate rulers beneficial to the common people as well? Illustrate with examples. [20 Marks]

क्या सल्तनत शासकों द्वारा लागू किए गए आर्थिक उपाय आम जनता के लिए भी लाभदायक थे? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [20 अंक]

Candidates must not write on this margin

सल्तनकाल मे (1206-1526ई) मे अलग-2 शासको ने, साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण हेतु आर्थिक उपाय अपनाए थे जिनके घोषित उद्देश्य में आम जनता के कल्याण का उद्देश्य भी था हालांकि हमे सुल्तानो के आर्थिक उपायो को समकालीन राजनीतिक प्रशासनिक उद्देश्य के संदर्भ मे देखना चाहिए

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

• बरनी अलाउद्दीन खिलजी की कृषि नीति के उद्देश्य के संदर्भ में कहता है कि "अकालिया का बोझ जुआका"

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

पर ना पड़े" तथा अलाउद्दीन ने ग्रामीण क्षेत्र मे विद्यालियो को समाप्त करके किसानो को सुरक्षा देने का प्रयास किया।

हाँलाकि 50% राजस्व की दर का बोझ और प्रतिगामी कर प्रणाली से निर्धन किसानो का शोषण हुआ। फिर भी भूराजस्व वृद्दि व राजनीतिक विस्तार का वास्तविक उद्देश्य पूरा हुआ था।

(1325-1351) तुगलक काल मे मुहम्मद बिन तुगलक ने दोआब मे वैज्ञानिक कृषि का प्रयास किया और किसानो को तकावी ऋण दिए परन्तु 50% भूराजस्व दर और अकाल की घटना के कारण आम जन की दुर्दशा का वर्णन

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

स्वयं बरनी करता है वह कहता है कि लोग ~~अमरुत~~ पेड़ की छाल खाने को मजबूर थे हालांकि मुहम्मद द्वारा राशनिंग की व्यवस्था से राहत पहुँची थी परन्तु ये प्रयास अल्पकालिक थे।

(1353-88)
मुहम्मद के बाद फिरोजशाह ने भी आम जन के लिए कई आर्थिक कल्याणकारी कार्य किए जैसे — बागवानी कृषि को प्रोत्साहन — 1200 बागों का निर्माण तथा सिंचाई व्यवस्था हेतु सतलज से नहरें निकलवायी।

फिरोजशाह अपने कल्याणकारी कार्यों में इसलिए आलोचना का शिकार होता है क्योंकि रोजगार ब्यूरो का गठन,

Candidates must not write on this margin

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

दीवान ए-शफ़ा , दीवान एस्तिहाक (पेंशन)

इन सभी का घोषित उद्देश्य सिर्फ मुस्लिम प्रजा के कल्याण का था जिसमे हिंदू प्रजा को वंचित रखा गया।

इस प्रकार सल्तनत काल में सुल्तानो के आर्थिक प्रयास अधिक राजस्व संग्रह, राजनीतिक नियंत्रण तथा साम्राज्य निर्माण के वास्तविक उद्देश्य के साथ रहे थे और उनका कभी-कभी आम जनता को सीमित लाभ मिला तो कभी उनका शोषण अधिक बढ़ गया।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.7(b) Critically assess the contributions of Amir Khusarau and Barani to Indo – Persian Literature. [15 Marks]

इंडो-फ़ारसी साहित्य में अमीर खुसरौ और बरनी के योगदान का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें। [15 अंक]

Candidates must not write on this margin

सल्तनतकाल मे बरनी और अमीर खुसरो अपने समय के महत्वपूर्ण साहित्यकार व इतिहासकार रहे थे जिन्होंने इण्डो- इस्लामिक साहित्य मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

बरनी द्वारा फ़ारसी में तारीखे-ए-फिरोजशाही की रचना की तथा इसमें हमें बलबन से लेकर गियासुद्दीन के काल तक का इतिहास की जानकारी मिलती है बरनी समकालीन राजनीतिक अवस्था के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक व परिस्थितियो का

भी वर्णन करता है।

हालांकि बरनी का कारमो लेखन अधिक धार्मिक पाया जाता है जिसमे वह हिंदू विरोधी प्रतीत होता है तथा उसके लेखन में पूर्वाग्रह के साथ-साथ तिथि सम्बंधी त्रुटियाँ भी पायी जाती है।

एक तरफ जहाँ हिंदू-मुस्लिम संस्कृति के टकराव से बरनी जैसे चिंतक का जन्म होता है वही अमीर खुसरो जैसे चिंतक का जन्म हिंदू- मुस्लिम संस्कृति के समन्वय से होता है।

अमीर खुसरो ने तुगलकनामा, नूर सिपीहर, मुहायन-ए-महायन जैसे ग्रंथो की रचना की तथा

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

उस समय फ़ारसी – हिंदी के समन्वय से उर्दू के विकास को बढ़ावा मिला इसलिए अमीर खुसरो को तूती-ए-हिंद कहा जाता है।

अमीर खुसरो के लेखन से तुगलक वंश, खिलजी वंश के समय की राजनीतिक सामाजिक, सांस्कृतिक माहौल की सुंदर झलक मिलती है।

यद्यपि खुसरो भी अधिक निरपेक्ष लेखन के बावजूद भी शासकों के प्रति चाटुकारितापूर्ण नीति अपनाता है।

कुछ सीमाओं के बावजूद भी सल्तनतकालीन इण्डो-इस्लामिक साहित्य में खुसरो व बरनी का योगदान महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Q.7 (c) Can we consider the states like Bengal, Awadh and Hyderabad as 'successor states' of the Mughal state? [15 Marks]

क्या हम बंगाल, अवध और हैदराबाद जैसे राज्यों को मुगल राज्य का 'उत्तराधिकारी राज्य' मान सकते हैं? [15 अंक]

Candidates must not write on this margin

उत्तराधिकारी राज्य का तात्पर्य होता है केंद्रीय शक्ति के कमजोर या समाप्त होने पर क्षेत्रीय स्तर पर केंद्रीय परंपरा को बनाए रखते हुए ही नए राज्यो का निर्माण।

18वीं सदी में मुगल साम्राज्य कि शक्ति मे ह्रास के कारण क्षेत्रीय राज्यो द्वारा अपनी स्वतंत्र स्थिति का उपयोग करते हुए ही शासन किया जाना लगा जैसे –

बंगाल मे ~~1717~~ 1717 ई. मे मुर्शिद कुली खान के नेतृत्व मे स्वतंत्र बंगाल राज्य की स्थापना हुई तथा 1722 में सआदत खाँ द्वारा अवध राज्य और

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

Candidates must not write on this margin

1724 मे निज़ाम उल मुल्क द्वारा हैदराबाद राज्य की स्थापना कि।

— उत्तराधिकारी राज्य मानना

— • बंगाल, अवध व हैदराबाद जैसे राज्यो को निम्नलिखित कारणो से उत्तरधा उत्तराधिकारी राज्य माना जा सकता है जैसे

(1) उनके द्वारा प्रशासनिक, मुराजस्व व्यवस्था मे मुगल साम्राज्य की पद्धति को अपनाया जाना (उदा०) दीवान -ए-वज़ीर का पद और जागीरदारी व्यवस्था

(2) इन राज्यो के शासको ने मुगल बादशाह की वैधता को स्वीकार करते हुए बादशाह के नाम के सिक्के चलवाए

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM

और बादशाह के नाम का खुतबा पढ़वाया।

उत्तराधिकार राज्यो की सीमाएँ

(•) स्वतंत्र रूप से शासन करना तथा बंगाल के नवाबो द्वारा जागीरदार के स्थान पर ठेका प्रणाली को अपनाना।

(•) विदेशी कंपनी ब्रिटिश के साथ स्वतंत्र समझौते करना (इलाहाबाद संधि) तथा स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन।

यद्यपि फिर भी बादशाह की औपचारिक वैधता से शासन करने के कारण बंगाल, अवध व हैदराबाद को मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी राज्य माना जा सकता है।

Copyright © by SELFSTUDYHISTORY.COM